Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र का मुखपत्र

श्रुत सागर

आशीर्वाद : राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प्रधान संपादक : मनोज जैन वर्ष : २, अंक : ५ कार्तिक वि.सं. २०५३ नवम्बर १९९६ संपादक : डॉ. बालाजी गणोरकर

अजीमगंज (पं. बंगाल)

राष्ट्रसंत आचार्यश्री पद्मसागरसूरीश्वरजी की निश्रा में शानदार शासन प्रभावना

पूज्य शासन प्रभावक, राष्ट्रसंत, आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा. आदि साधुभगवंतों की पुण्य निश्रा में अजीमगंज (मुर्शिदाबाद, प. बंगाल) में चातुर्मास की सुंदर आराधना- तपस्यादि चल रही है. पर्युषणा पर्व की आराधना भी तपश्चर्या प्रभुभक्ति एवं प्रभावक प्रवचनों द्वारा ठाठ से सम्पन्न हुई है. श्रीसंघ में मासक्षमण, १५ उपवास, अठ्ठाई, अठ्ठम आदि विविध तपश्चर्या भी सराहनीय रही. मुनिश्री प्रेमसागरजी म. की अठ्ठाई की तपस्या भी सुख शाता पूर्वक सम्पन्न हुई. स्थायी, साधारण एव अन्यान्य खातों में भी पूज्यश्री की प्रेरणा से अच्छा फंड एकत्र हुआ है. तदुपरांत देव द्रव्य की भी बहुत अनुमोदनीय उपज इस वर्ष में हुई है. बहुत से स्थानीय बंगाली लोगों ने भी आचार्यश्री के प्रवचन परिचय से आहार शुद्धि की प्रतिज्ञा की है.

पूज्य आचार्यश्री दीक्षा के पश्चात् प्रथम बार खुद की जन्म भूमि में पधारे हैं. अतः श्रीसंघ में एक अपूर्व उत्साह देखने को मिला है.

भादो शुदि एकादशी २३ सितम्बर के शुभ दिन पूज्य आचार्यश्री के ६१ वें जन्म दिन के उपलक्ष में संयम अनुमोदन दिन बड़े समारोह के साथ मनाया गया. इस अवसर पर हजारों की संख्या में मुर्शिदाबाद, कलकत्ता सहित आसपास के जिलों तथा अहमदाबाद, मुंबई, चेन्नइ, बेंगलोर, राजस्थान आदि दूरस्थ स्थानों से आए गुरुभक्तों ने पूज्य आचार्यश्री के दर्शन, वन्दन कर आशीर्वाद ग्रहण किया.

इस अवसर पर श्री सुंदरलालजी पटवा (पूर्व मुख्यमंत्री-म. प्र.) विशेष रूप से उपस्थित थे. पटवाजी ने पूज्य आचार्यश्री के प्रति अपनी श्रद्धा प्रवचन द्वारा अभिव्यक्त की. अन्य वक्ताओं ने भी प्रासंगिक उद्‌बोधन किया. महावीर मंडल (अजिमगंज) के द्वारा सुंदर गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किये गये. कलकत्ता से आए श्री देवेन्द्र बेंगाणी के गीत ने सबको मुग्ध बना दिया. अनुकंपा के रुप में १०० से अधिक लोगों को जयपुर फुट दिये गये. वर्षों से अपंग, चलने में लाचार व्यक्तियों के चेहरों पर देखने लायक चमक थी. व्हील चेयर एवं वैशाखी आदि दिये गये. रक्तदान शिविर में भी लोगों ने उत्साहपूर्वक [शेष पृष्ठ २ पर

✡ नूतन वर्ष की शुभकामना ✡

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक से प्रारम्भ होने वाला दीपमालिका पर्व आप सब के अंतरभाव में सम्यक् ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करने वाला बने। गणधर श्री गौतम स्वामीजी के कैवल्यज्ञान की प्राप्ति का मंगल प्रभात (नूतन वर्ष) आप सब के लिये सुख-शांति समाधि प्रदान करने वाला हो एवं धर्म आराधनामय बनें, यही मंगल कामना पूर्वक आशीर्वाद है।

शुभेच्छुक

पद्मसागरसूरि

अजिमगंज, दि. - १०-११-९६.

इतिहास के झरोखे से

अकबर प्रतिबोधक जगद्‌गुरु हीरविजयसूरि.

✍ मनोज जैन

[पूरे भारतवर्ष में भाद्रपद सुदि ११ के दिन जिनका चतुःशताब्दी महोत्सव सोल्लास मनाया गया, उन जंगम युगप्रधान, जगद्‌गुरु, जैनाचार्य श्री हीरविजयसूरीश्वरजी को आज कौन नहीं जानता. ४०० वर्ष पूर्व जिन्होंने सम्राट् अकबर को प्रतिबोध देकर 'अहिंसा परमो धर्मः' का डंका बजाया था. इस ऐतिहासिक घटना को कौन भूल सकता है. तत्कालीन विद्वानों ने अपने ग्रंथों में आपका सम्मान पूर्वक उल्लेख किया है. तब से आज तक संसार भर में अकबर के विषय में हो रहे संशोधनों में जगद्‌गुरु श्री हीरविजयसूरिजी को जोड़े बिना परिपूर्णता नहीं होती है. यही उनके महान व्यक्तित्व की पहचान है.

यह भी स्वभाविक ही है कि इतने बड़े प्रभावी महापुरुष के जीवन चरित्र के विषय में हमें जिज्ञासा उत्पन्न हो. शासन प्रभावक जैनाचार्य की गरिमा और महिमा क्या होती है यह उनके जीवन चरित्र से अवगत होता है. हमने इस लेखांश में श्रद्धाञ्जलि के रुप में उनका यत्किञ्चित् परिचय देने का प्रयत्न किया है. यद्यपि लोकोत्तर महर्षियों का संपूर्ण परिचय कराना अशक्य मालूम होता है तथापि स्वपर बोधाय यत्न किया है. अतः पाठकगण इससे अपनी जिज्ञासा को और जागरुक करेंगे. साथ ही इन आर्षदृष्टा के विषय में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त कर प्रचार- प्रसार के द्वारा कल्याण कामी बनेंगे. -संपादक]

ठीक आज से चार सौ वर्ष पूर्व गुर्जरदेशवर्ती प्रह्लादनपुर (पालनपुर) में वि.सं. १५८३ मार्गशीर्ष शुक्ला ९ के दिन कुराशाह नामक श्रेष्ठि थे. उनकी श्राविका नाथीबाई की कुक्षी से पुत्ररत्न का जन्म हुआ. जन्मोत्सव पूर्वक बालक का नाम हीराचन्द रखा गया. माता ने स्वप्न में हीरे की राशि देखी थी, तदनुरूप सार्थक नाम रखा गया.

माता-पिता की ममता और लाड़-प्यार में हीराचन्द [शेष पृष्ठ २ पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृष्ठ १ का शेष] राष्ट्रसंत की शासन प्रभावना

भाग लिया. दीन-दुःखी लोगों के भोजन समारंभ में ९ से १० हजार व्यक्तियों ने भाग लिया. सारा ही समारोह खूब उत्साहवर्धक रहा. पूजायात्रा का दृश्य भी दर्शनीय था. श्री नेमिनाथ जिनमंदिरमें भव्य आंगी, पूजा, कुमारपाल महाराजा की आरती का आयोजन भी रखा गया था. पूज्य आचार्यश्री ने कुछ दिनों के लिये श्रीसंघ की विनती पर जीयागंज भी स्थिरता की.

अजीमगंज में विशाल भवन का निर्माण

श्री जैन संघ, अजीमगंज द्वारा अजीमगंज के पनोते पुत्र, राष्ट्रसंत, आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज की संसारी मातुश्री श्रीमती भवानीदेवी की पुण्यस्मृति में विशाल जैन भवन का निर्माण करना तय किया गया है. इस भवन का नाम **श्री भवानी देवी स्मृति हॉल** रखा जाएगा. साथ ही मातृ सदन (हॉस्पिटल) व गृह उद्योग भवन भी बनेंगे.

वि. सं. २०५३ कारतक वद दूज के दिन अजीमगंज में राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में श्रीनेमिनाथजी मंदिर सहित तीन मंदिरो में प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जायगा.

माघ सु. दूज दि. ०९-०२-९७ के दिन कलकत्ता में मुमुक्षु श्री संदीप कुमार रामपुरिया की भागवती दीक्षा व भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव भी आयोजित किया गया है.

अगला चातुर्मास दिल्ली में

वि.सं.२०५३ में राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज को दिल्ली में चातुर्मास करने हेतु दिल्ली श्रीसंघ के १५० व्यक्तियों ने विनती की. जिसे आपश्री ने अत्याग्रहवश स्वीकार किया है. □

वृत्तान्त सागर

♦ परमात्मभक्तिरसिक प.पू. आचार्य श्री कल्याणसागरसूरीश्वरजी म.सा. एवं ज्योतिर्विद् गणिवर्य श्रीअरुणोदयसागरजी म.सा. आदि की निश्रा में विजयनगर जैन संघ, अहमदावाद में पर्व पर्युषण की सुन्दर आराधना सम्पन्न हुई. पू. गणिवर्यश्री ने ११ उपवास सुखशाता पूर्वक किए थे.

♦ दि. ०३.१२.९६ को श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा में परमात्मभक्तिरसिक ज्योतिषज्ञ पू.आ. कल्याणसागरसूरीश्वरजी का शुभागमन हुआ. आपके आगमन पर श्री संघ ने भव्य स्वागत एवं परमात्मभक्ति का आयोजन किया. यहाँ की गतिविधियों को देख आचार्यश्री ने बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और ज्ञानमंदिर सहित इस तीर्थ के विकास हेतु शुभकामना व्यक्त की.

♦ आचार्यश्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न पंन्यासश्री वर्धमानसागरजी म.सा., पू.गणिश्री विनयसागरजी म.सा. आदि मुनिवरों की निश्रा में जीयागंज जैन संघ में पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना आध्यात्मिक आनंद उल्लास के साथ सम्पन्न हुई. मासक्षमण, अट्ठाई आदि की महान् तपश्चर्या भी उल्लेखनीय रही. मुनिश्री विवेकसागरजी म.सा. ने बालक-बालिकाओं को धार्मिक सूत्रों की वाचना देकर छोटे बच्चों मे धार्मिक उत्साह बढ़ाया.

♦ मुनिश्री हेमचन्द्रसागरजी म.सा., मुनिश्री निर्वाणसागरजी म.सा. मुनिश्री अजयसागरजी म.सा. आदि मुनिवरों की शुभ निश्रा में पंडित श्रीवीरविजयजी उपाश्रय, भट्ठी की बारी (अहमदाबाद) जैनसंघ में पर्व पर्युषणा की आराधना सोल्लास सम्पन्न हुई. मासक्षमण, १५ उपवास, अट्ठाई इत्यादि तपों का तांता लगा रहा. तपस्या की अनुमोदनार्थ श्रीसंघ ने विविध पूजनों से युक्त प्रभुभक्ति महोत्सव आयोजित किया था. श्रीसंघ ने प्रभु भक्ति के महोत्सवपूर्वक तपोनुमोदना की .

♦ श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र-कोबा (गुजरात) तीर्थ में पर्व पर्युषण के दिनों में प्रभु महावीर से अलंकृत महावीरालय में आठों दिन चित्ताकर्षक सुंदर अंगरचनाएँ की गई.

♦ मुनिश्री निर्मलसागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पद्मोदयसागरजी म.सा. की निश्रा में गोल (राजस्थान) श्रीसंघ में पर्युषण पर्व की आराधना परिपूर्ण हुई. श्रीसंघ ने उपधान तप कराने का तय किया है. प्रथम प्रवेशः मुहूर्त वि.सं.२०५२ आश्विन शुक्ल १४, दिनांक २५.१०.९६; द्वितीय प्रवेश मुहूर्तः संवत् आश्विन कृष्ण १, दिनांक २७.१०.९६.

♦ प.पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न ज्योतिर्विद् गणिवर्य श्री अरुणोदयसागरजी के संयम जीवन के २५ वर्ष परिपूर्णता के निमित्त संयम जीवन की अनुमोदनार्थ मार्गशीर्ष शुदि ३, शुक्रवार, दि १३/१०/९६ के दिन डांगरवाँ (महेसाणा के समीप) परमात्म-भक्ति स्वरूप महापूजन आदि का आयोजन किया गया है. इस प्रसंग पर दूरस्थ बंबई, बैंगलोर, मद्रास, जोधपुर आदि शहरों से एवं अहमदाबाद आदि समीपस्थ शहरों से भक्ति संपन्न अनेक श्रावकगण सहभागी बनेंगे. मागसर सुदि ५, रविवार के दिन श्री संघ के जिनालय की वर्षगांठ भी उल्लास पूर्वक मनाई जाएगी.

♦ पू. आचार्य श्रीमद्बुद्धिसागरसूरि की समुदायवर्तिनी संयम-वय स्थवीरा, पू. साध्वी महत्तरा श्री कुसुमश्रीजी म. की ३७वीं ओलीजी की पूर्णाहुति सुखशाता पूर्वक हुई. आप विशाल शिष्या परिवार सह बुद्धिसागरसूरि भक्ति आराधना भवन, रामनगर साबरमती में चातुर्मास हेतु बिराजमान है. □

पृष्ठ १ का शेष] आचार्य हीरसूरि...

का शैशव काल गुजर गया. समाज की परम्परा के अनुसार हीराचन्द भी व्यावहारिक ज्ञान हेतु पाठशाला में भेजे गये. साथ-साथ धार्मिक ज्ञान हेतु संवेगी साधुओं की निश्रा में जाने लगे. पूर्वकृत पुण्य कर्मों के फलस्वरूप हीराचन्द छोटी उम्र में ही व्यवहारिकता में दक्ष और धार्मिक शिक्षा में प्रवीण हो सर्वजन प्रिय बने.

एक दिन पालनपुर में जैनाचार्य श्री दानसूरीश्वरजी का शुभागमन हुआ. प्रौढ़प्रभावी व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री की अमृत देशना पुष्करावर्त के मेघ की तरह बरसने लगी. चतुर बालक हीराचन्द भी प्रवचन पान करने लगे. धीरे-धीरे बालमानस में संसार का स्वरूप स्पष्ट होता गया और हीराचन्द वैराग्यवासित होता गया. इसी बीच एक दिन प्रवचन श्रवण में मुग्ध हीराचन्द के उपर आचार्यश्री का पवित्र दृष्टिपात हुआ. अपने ज्ञानबल से उन्होंने हीराचन्द मे छिपी महानता को पहचान ली. उन्होंने श्रावक अग्रणियों को बुलाकर कहा कि यह बालक दीक्षा लेकर महान शासन प्रभावक आचार्य बन सकता है. अतः इसके माता-पिता को समझा कर इस बालक को शासन को सौंपा जाय. श्रीसंघ ने कुराशाह और नाथीबाई को हीराचंद के विषय में एक समर्थ विद्वान जैनाचार्य द्वारा की गई भविष्यवाणी से वाकिफ कराया. परन्तु उनकी ममता ने इस बात का तत्काल अस्वीकार कर दिया.

कुछ समय पश्चात् कुराशाह और नाथीबाई का देहान्त हो गया. इस दुःखद घटना से हीराचन्द के मन में संसार के प्रति उदासीनता और वैराग्य भावना पुष्ट होने लगी. कुराशाह के और तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ थी. उनके नाम क्रमशः संघजी, सूरजी, श्रीपाल, रम्भा, राणी और विमला थे. हीराचन्द सबसे छोटी सातवीं संतान थी. अब हीराचन्द अपनी बहन के घर पाटण में रहने लगे.

एक बार संयोगवशात् आचार्य श्री दानसूरिजी का पाटन में आगमन हुआ. उनके समक्ष अपनी दृढ़ भावना व्यक्त करते हुए हीराचन्द ने दीक्षा लेने का निर्धार किया. बाद में बहन और उनके परिवार की अनुमति से सं.१५९६, कार्तिक कृष्ण द्वितीया के दिन महामहोत्सव पूर्वक प्राव्रजित हुए. नूतन मुनि का नाम हीरहर्ष उद्घोषित किया गया. गुरुकृपा से हीरहर्षमुनि अल्पकाल में ही स्व-पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रों के निष्णात हुए. कोई शास्त्र ऐसा नहीं रहा जिसका हीरहर्ष मुनि ने अध्ययन न किया हो. आचार्यश्री दानसूरिजी ने उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता को देखकर अपने उत्तराधिकारी के पद पर नियुक्त करना चाहा. अब आपने एक बार सूरिमन्त्र की आराधना कर अधिष्ठायक देव को प्रसन्न किया. अधिष्ठायक देव ने भी हीरहर्ष मुनिवर को योग्य घोषित किया. तब आचार्यश्री ने सिरोही नगर में वि.सं.१६१० में मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी के शुभ दिन मुनि हीरवर्ष को आचार्यपद से अलंकृत किया. इस अवसर पर राणकपुर तीर्थ के निर्माता धरणाशाह के वंशज चांगा संघपति ने बड़ा महोत्सव करके शासन प्रभावना की. कहते हैं उस महोत्सव में सुवर्ण मुहरों की प्रभावना की गई थी. आचार्य पदवी के बाद आपका नाम हीरविजयसूरि रखा गया. अब आप तपागच्छ की पाट परम्परा के उत्तराधिकारी बने. वि.सं.१६२१ में आपके गुरु श्री दानसूरिजी म.सा. का वटपल्ली (वडाली) नगर में समाधिपूर्वक कालधर्म हो गया. आपको उस वेला में बड़ा हृदयशोक हुआ. तब इष्टदेव ने आकर आपको आश्वस्त किया. गुरुभक्ति निमित्त वहाँ पर चरणपादुका युक्त गुरुमंदिर बनबाया गया. तदनन्तर आप पं.जयविमल आदि मुनिवरों सहित ग्राम-नगर वन-उपवन विहार करते हुए भव्य जीवों को उपदेश देते हुए गान्धार नगर पधारे. श्रीसंघ में आपके पदार्पण से धर्म भावना नवपल्लवित होने लगी.

इस ओर फतहपुरसिकरी में सम्राट् अकबर अपने झरोखे में बैठा-बैठा नगर शोभा निहार रहा था. इतने में उसने देखा कि एक स्त्री को पालकी में बिठाकर जुलूस जा रहा था. "आचार्य हीरविजयसूरि की जय" इस प्रकार की ध्वनि गगनमण्डल में प्रसरित हो रही थी. पूछने पर सेवकों से पता चला कि थानसिंह नामक एक श्रावक की चम्पाबाई श्राविका ने छःमासी तप किया है तथा यह भी जाना कि जैन उपवास में दिन रहते सिर्फ उबाला हुआ पानी के सिवाय कुछ नहीं लिया जाता. अकबर को आश्चर्य हुआ. तुरन्त फरमान देकर पालकी राजमहल में बुलाई और चम्पाबहन से वार्तालाप किया. विश्वास न होने पर शेष एक महीने तक अपनी व्यवस्था में तप की परीक्षा की. जब सत्यता प्रतीत हुई तब सम्राट् के हृदय में कोमलता पैदा हुई. उसने पूछा कि "यह तप तुम किसके प्रभाव से कर रही हो ?" जबाब मिला गुरुदेव आचार्यश्री हीरविजयसूरि के आशीर्वाद से. सम्राट् को जिज्ञासा हुई कि इसके गुरु में ऐसी कौन सी दिव्य शक्ति होगी कि जिसके प्रभाव से यह इतनी महान तपस्या कर रही है. अन्ततः सम्राट् ने अपने अमलदारों को बुलाया और हीरविजयसूरिजी के बारे में पूछताछ की. उस समय थानसिंह ने बताया कि हमारे गुरुवर इन दिनों गुर्जरदेशवर्ती गान्धार नगर में विराजमान हैं. अकबर ने तुरन्त मोदी और कमाल को बुलाकर अहमदावाद के सुबेदार शाहबुद्दिन पर फरमान जारी किया. उसमें इस बात का आग्रह किया था कि "आचार्यश्री को किसी प्रकार की असुविधा न हो उसका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाय".

श्रीसंघ को जब इस वृत्तान्त का पता चला तो पहले कुछ तर्क-वितर्क हुआ. बाद में आचार्यश्री ने संघ को कहा कि "भविष्य में शासन की प्रभावना होने वाली है" इसलिए हमारा जाना ठीक ही होगा. श्रीसंघ ने आचार्यश्री को जाने देने का सर्वसम्मति से निश्चय किया. गांधार से आपने फतहपुर की ओर प्रस्थान किया. अहमदावाद-पाटन-सिद्धपुर-सिरोही व चित्तौड़ होते हुए आप वि.सं.-१६३९ ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी के दिन फतहपुर सिकरी पधारे. आपके साथ उस समय विमलहर्ष गणि, सिंहविमल गणि, पं. हेमविजय गणि, पं. लाभविजय गणि, पं. धनविजय गणि, शान्तिचंद्र उपाध्याय आदि १३ मुनिवर थे.

अकबर ने आपके आगमन पर शाही जलूस के साथ स्वागत किया तथा अबुलफजल, थानसिंह, अमीपाल आदि विद्वानों को आपकी सेवा में नियुक्त किया. सम्राट् और आचार्य के बीच राज दरबार में भेंट हुई और कई दिनों तक नियमित रूप से धर्मदर्शन संबंधित अनेक विध संगोष्ठियां की. धर्म के विषय में प्रश्नोत्तर हुए एवं आचार्यश्री के विद्वत्ता भरे जवाबों से एवं साधु आचारों से सम्राट् काफी प्रभावित हुआ. इतने दूर देश से आचार्यश्री को बुलाकर अपनी जिज्ञासा परितृप्त कर श्रद्धावनत हो धन्यवाद दिया तथा अपने लिये कुछ माँगने का आग्रह किया. तब निस्पृह साध्वाचार का परिचय देकर सूरिजी ने उसे और प्रभावित किया. अन्त में जब अत्यंत आग्रह किया कि कुछ तो लेना ही होगा तब सूरिसम्राट् ने सिर्फ इतना ही माँगा कि पर्युषण पर्व में हमारी साधना में सहायक अहिंसा का पालन पूरे राज्य में प्रवर्तमान करें. इस पर सम्राट् ने बड़ी खुशी के साथ पर्युषणा के आठ दिन और अपनी ओर से चार दिन मिलाकर १२ दिन तक पूरे राज्य में अहिंसा का कड़ा पालन होगा ऐसा वचन दिया तथा ५ फरमान तैयार कर गुजरात, मालवा, अजमेर, दिल्ली, फतहपुर, लाहौर और मुल्तान आदि प्रान्तों में भेजे गये.

अकबर को इतने से संतोष नहीं हुआ क्योंकि यह सब तो परोपकार के लिये था. अतः व्यक्तिगत कुछ ग्रहण करने के लिए बाध्य किया. अन्त में सम्राट् ने पद्मसुंदरयति का ज्ञान भण्डार जो वर्षों से खुद ने सम्भाल रखा था उसे समर्पित किया. वह भण्डार सूरिजी ने आगरा में श्रीसंघ को अर्पित किया. सूरिजी के तप-त्याग और विद्वत्ता से सम्राट् के हृदय में परिवर्तन आया. उसने अपने जीवन से हिंसा को अलग कर दिया तथा परस्त्रीगमनादि त्याग का नियम ग्रहण किया. इतना ही नहीं बाद में समस्त राज्य में ६ महीने तक अमारि का प्रवर्तन कराया. इसके लिये कुछेक मुसलमानों ने सम्राट् की निंदा भी की, लेकिन सम्राट् ने उसके लिये जरा भी परवाह नहीं की.

आचार्य हीरसूरि म.सा. की प्रेरणा पाकर एक मुसलमान शहनशाह के जीवन में जो परिवर्तन आया और समस्त हिन्दुस्तान में उसकी जो असर हुई वह तो अवर्णनीय है. इस घटना को इतिहास के पन्नों पर विस्तार से लिखा गया. हिन्दु, मुस्लिम, जैन एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपने-अपने ग्रंथों में इसका गौरव युक्त उल्लेख किया है.

अन्त में सम्राट् अकबर ने सूरिजी को जगद्गुरु की उपाधि से नवाजा. सूरिसम्राट् ने समाज कल्याण के लिये जजिया कर बन्द कराया एवं आर्य संस्कृति और धर्म की रक्षा के लिये पालिताना, आबु, गिरनार, राजगृही के पाँच पहाड़ तथा सम्मेतशिखर आदि तीर्थों को श्रीसंघ के स्वाधीन करवाये. बाद में धर्मोपदेश हेतु सम्राट् के कहने से उपाध्याय शान्तिचन्द्रजी को वहीं छोडकर आप आगरा, मथुरा आदि जैन स्तुपों की यात्रा करते हुए गोपगिरि पधारे. सं.१६४१ का चातुर्मास इलाहाबाद और सं. १६४२ का आगरा में व्यतीत कर शेष काल गुजरात में बिताने के लिए पालिताणा, गिरनार की ओर विहार कर उन्नतपुरी (ऊना) पधारे.

आपने न सिर्फ अकबर को ही प्रतिबोधित किया था बल्कि अन्यान्य सुबेदारों और राजा महाराजाओं पर भी ऐसा ही प्रभाव डाला था. खानखाना, महाराव सुरताण, सुल्तान हबीबुल्लाह, आजमखाँ, सुल्तान मुराद आदि को भी प्रतिबोध देकर धर्मप्रेमी बनाया. आचार्यश्री का निजी जीवन भी कठोर तप साधना से परिप्लावित था. आपने २२५ अठ्ठम, १८० छठ्ठ, ३६०० उपवास, २००० आयम्बिल २००० निवी, वीश स्थानक तप २० बार, ग्यारह महीने का प्रतिमातप, सूरिमन्त्र आराधना तप, गुरुदेव के समाधिमरण निमित्त एकासन १३ मास तक किये. चार करोड़ सज्झाय, नित्य जप आदि ज्ञान-ध्यान आदि प्रवृत्तियों में रात दिन अप्रमत्त रहते थे. आपकी आज्ञा में २५०० साधु थे. जिसमें

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक आचार्य, ६ उपाध्याय, १६० पण्डित तथा शेष मुनि थे. साध्वीजी लगभग ५००० और श्रावक श्राविका लाखों की संख्या में थे. इतना बड़ा धर्म साम्राज्य होने पर भी आपमें गर्व आदि दोष नाम मात्र भी नहीं थे. "सवी जीव करु शासनरसी" इस भावना से लाखों जीवों को धर्मबोध कराने के लिये आपने भारतवर्ष में कितना कठोर-उग्र विहार किया था वह अन्यान्य ग्रन्थों से हम जान सकते हैं.

आचार्यश्री हीरविजयसूरिजी ने अपना अन्त समय नज़दीक जानकर श्रद्धालु भक्त श्राद्ध एवं मुनिगण से क्षमायाचना की और कहा **कि** "अब मेरी मृत्यु होनेवाली है परन्तु मुझे इसकी चिन्ता नहीं है क्योंकि **जातस्य ध्रुवं मृत्यु** संसार में सभी जीवों को मृत्यु अवश्यंभावी है. अतः हे भव्यजीवों ! आप लोग अपने-अपने संयम धर्म की आराधना में उद्यत बनना. मेरी पाट पर आचार्य सेनसूरिजी मौजूद है, अतः आपको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं है. परमात्मा वीर के शासन की उन्नति करने में कटिबद्ध रहना." इस प्रकार साधु और श्रावकों को अन्तिम उपदेश देकर सबको सावधान करके, पंच परमेष्ठि का शरण करके, नमस्कार महामन्त्र का ध्यान करते हुए वि.सं.१६५२ में भाद्रपद शुक्ल एकादशी, गुरुवार के दिन भव संबंधि औदारिक शरीर को त्यागकर देवलोक सिधारे.

आपके कालधर्म के समाचार पाते ही पाटण स्थित आचार्य सेनसूरिजी, फतहपुर में सम्राट् अकबर और पूरे हिन्दुस्तान का श्रीसंघ गहरे शोक में डूब गया. हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हो विलाप करने लगे. ऊना नगर के उद्यान में आपकी देह का अग्निसंस्कार किया गया. अकबर ने अपने राज्य में उस दिन शोक मनाया तथा नाच-गान आदि बन्द करवा दिये. अग्निसंस्कार के लिये ८४ बीघा जमीन श्रीसंघ को भेंट कर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की. श्रीसंघ ने वहाँ पर गुरु स्तूप बनाया और चरणपादुका की प्रतिष्ठा की.

आज भी जिस भूमि पर आचार्यश्री का स्तूप है वहाँ रहा हुआ आम्रवृक्ष प्रतिवर्ष भादो सुदि ११ के दिन फल देता है. अन्य भी आबू, पाटन, खंभात, अहमदाबाद, सुरत, हैदराबाद, आगरा, महुआ, मालपुर, सांगानेर, जयपुर आदि शहरों में हीरविहार (गुरुमंदिर) देखा जाता है. विशेष में श्रद्धापूर्वक जगद्गुरु की पूजा भक्ति करनेवालों के दुःख दारिद्रय दूर हो जाते हैं.

अन्त में जगद्गुरु हीरविजयसूरीश्वरजी के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के इच्छुकों के मार्गदर्शन हेतु कुछेक प्राचीन, अर्वाचीन ग्रंथों की सूची यहां प्रस्तुत है. पाठकगण इससे लाभान्वित होंगे इसी मंगलकामना के साथ.

१. हीर सौभाग्य महाकाव्य (संस्कृत, गुजराती) २.हीरसुंदर काव्य ३. हीरप्रश्न (संस्कृत) ४. जगद्गुरु हीर निबंध (हिन्दी) ५. जगद्गुरु आचार्य हीरसूरीश्वरजी (गुजराती) ६. हीरसूरीश्वरजी की स्तुति (गुजराती) ७. हीरसूरीश्वर रास (मारू गूर्जर) ८. हीरविजयसूरिपादुकाष्टक (संस्कृत) ९. हीरविजयसूरि सज्झाय (मारू गूर्जर) १०. हीरकीर्ति परम्परा (मारु गुर्जर) ११. हीरविजयसूरि अष्टक (संस्कृत) १२. मुसलमानी रियासत (गुजराती) १३. सम्राट् और सूरीश्वर (हिन्दी) १४. भारतवर्ष (बंगाली) १५. आइन-ए-अकबरी (उर्दू) १६. अकबर (विन्सेंटकृत) (अंग्रेजी) १७. तपागच्छपट्टावली (संस्कृत) १८. कोन्फरन्स हेरल्डनो ऐतिहासिक अंक (गुजराती) □

पश्चिम भारतीय जैन चित्रकला : तकनीक

✍ ललित कुमार

पश्चिम भारतीय जैन चित्र शैली के चित्रों को बनाने की तकनीक सरल थी. ग्रंथ लेखन के समय चित्रों के लिये रिक्त स्थान छोड़ दिए जाते थे. ग्रंथ लेखन का कार्य पूरा होने पर उसे चित्रकार को दे दिया जाता था. कितनी बार तो लिखने और चित्र बनाने दोनों कार्य एक ही व्यक्ति करता था. जब चित्रकारी का कार्य किसी चित्रकार द्वारा होता था तब प्रति का लेखक पृष्ठ के हाँसिए पर दृश्य अंकन या दृश्य के विषय का निर्देश कर देता था. अनपढ़ कलाकार के लिए लेखक दृश्य के विषय को एक संक्षिप्त रेखांकन द्वारा इंगित कर देता था. जिससे कलाकार को पृष्ठ के रिक्त स्थान पर कौन सा चित्र बनाना है उसका पता चल जाता था. अथवा कलाकार स्वयं अपनी समझ के लिये इन संक्षिप्त रेखांकनों को लिपिकार के समक्ष बना लेता था. इस प्रकार चित्र के विषय सूचक संक्षिप्त रेखाचित्र अपने आप में बड़े रोचक लगते हैं. इन्हें प्रायः चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की चित्रित कल्पसूत्र की पोथियों में देखा जा सकता है. **श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र,** कोबा के सम्राट् सम्प्रति संग्रहालय की एक चित्रित कल्पसूत्र-कालकाचार्य कथा के कुछ प्रदर्शित पत्रों में हाँसिए पर इन रेखाचित्रों को देखा जा सकता है.

चित्र बनाने के लिये सबसे पहले कलाकार पीले या लाल रंग से तूलिका द्वारा संपूर्ण रेखाचित्र बनाता था. इसी दौरान रेखाओं को सुदृढ़ और स्पष्ट करने की प्रक्रिया भी पूरी कर ली जाती थी. वैसे इन चित्रकारों को इतना अभ्यास होता था कि वे एक बार में ही स्पष्ट रेखाचित्र बना लेते थे.

इस शैली में भूमि या सफेद रंग के आरम्भिक लेप लगाने की कोई परम्परा नहीं थी. परन्तु आरम्भिक काल की चित्रित काष्ठ पट्टिकाओं में सफेद रंग की भूमि बनाने की प्रक्रिया देखी जा सकती है.

रेखांकन के बाद रंग भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती थी. जिसमें एक-एक कर अनेक रंग चित्र में भर दिए जाते थे. सबसे पहले जमीन या पृष्ठभूमि को लाल रंग से भर दिया जाता था. इसके बाद मानव आकृतियों, वास्तु, वृक्ष और पशु-पक्षियों को रंगा जाता था.

मानव आकृतियों में प्रायः पीले रंग का ही प्रयोग किया जाता था. शेष हेतु लाल एवं पीले रंग के अतिरिक्त नीला, सफेद और काला रंग भी प्रयोग में आता था. पश्चिम भारतीय जैन चित्र शैली में प्रायः शुद्ध रंगों का ही प्रयोग किया गया है अर्थात् मिश्रित रंगों का प्रयोग नहीं किया जाता था. पंद्रहवीं शताब्दी से सोने के रंग का प्रयोग भी इस शैली में होने लगा.

इस शैली में प्रयुक्त प्रायः सभी रंग खनिज व रासायनिक ही होते थे जिन्हें पीस कर बनाया जाता था. इन रंगों को बबूल के गोंद में मिलाकर प्रयोग किया जाता था. ब्रश या तूलिका गिलहरी, ऊंट या बकरी के मुलायम बालों से बनाई जाती थी. सोने के रंग का प्रयोग दो प्रकार से होता था. पहली रीति में सोने के वरख को शहद या शक्कर के पानी के साथ हाथ या एक विशेष प्रकार के खरल (खल) में घूंटा जाता था, जिससे उसके बहुत बारीक कण बन जाते थे. सोने के इन कणों को पानी से धो कर अलग निथार लिया जाता था. सोने के प्रयोग की दूसरी रीति में सोने के वरख का सीधा प्रयोग किया जाता था. इसके लिये चित्र के जिस भाग में सोने का रंग चढ़ाना हो उस पर गोंद का एक लेप लगा कर सोने के वरख को सीधा चिपका दिया जाता था. गोंद के सूखने पर वरख को ऊंगली से घिस दिया जाता था जिससे अतिरिक्त वरख निकल जाती थी. सोने के रंग से आच्छादित मानव आकृतियों के अंग-प्रत्यंग और वस्त्रों को स्पष्ट **[शेष पृष्ठ ६ पर**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन साहित्य - ४

अभी तक हमने प्राचीन जैन साहित्य का प्रारम्भिक परिचय किया है. अब ४५ आगमों का क्रमशः परिचय करेंगे.

१. आचारांगसूत्र :

यह सर्वविदित ही है कि अंगों के क्रम में आचारांग का नाम सर्वप्रथम है. आचारांग के पर्याय नाम इस प्रकार हैं : आयार, आचाल, आगाल, आसास, आयरिस, अंग, आइण्ण, आजाति तथा आमोक्ष आदि.

समवायांगसूत्र के अनुसार आचारांगसूत्र में निर्ग्रंथ सम्बन्धी आचार, गोचर, विनय, वैनयिक, स्थान, गमन, चंक्रमण, प्रमाण, योगयोजना, भाषासमिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, आहार-पानी सम्बन्धी उद्‌गम, उत्पाद, एषणा विशुद्धि - शुद्धाशुद्ध ग्रहण, व्रत, नियम, तप, उपधान, ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार से सम्बद्ध सुन्दर विवेचन प्राप्त होता है.

मुख्यतः जैन साधुओं को अपने आचार धर्म का पालन किस प्रकार करना है उससे सम्बन्धित सांगोपांग उत्कृष्ट वर्णन किया गया है. क्योंकि अपेक्षित ज्ञान के बिना विवक्षित वस्तु को स्व पर पर्याय के भेद वाले उसके सभी रूपों में समझना संभव नहीं होता. जो साधक एक वस्तु को भी स्व पर पर्याय भेद से यथार्थ जानता है, वह सर्व पदार्थ को जानता है. इस प्रकार यह ज्ञानादिक आसेवन विधि का प्रतिपादन करने वाला प्रथम अंग है.

नन्दीसूत्र से ज्ञात होता है कि आचारांग में श्रमण निर्ग्रंथों के आचार, गोचर, विनय, वैनयिक, शिक्षा, भाषा, अभाषा, चरण करण, यात्रा, मात्रा तथा विविध अभिग्रह विषयक वृत्तियों तथा ज्ञानाचार आदि पांच प्रकार के आचारों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है.

आचारांग के दो श्रुतस्कंध तथा पच्चीस अध्ययन हैं. प्रथम श्रुतस्कंध का नाम ब्रह्मचर्य है और इसमें नौ अध्ययन होने के कारण इसे नव ब्रह्मचर्य भी कहा गया है. यहां पर ब्रह्मचर्य शब्द का संयम के व्यापक अर्थ में उपयोग हुआ है. द्वितीय श्रुतस्कंध प्रथम श्रुतस्कंध की चूलिका के रूप में है. इसका अपरनाम आचाराग्र है. वर्तमान मान्यता के अनुसार इसे प्रथम श्रुतस्कंध का परिशिष्ट भी कहा गया है. द्वितीय श्रुतस्कंध में सोलह अध्ययन हैं. निर्युक्तिकार व वृत्तिकार इस भाग के विषय में कहते हैं कि स्थविर पुरुषों ने शिष्यों के हित की दृष्टि से आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध के अप्रकट अर्थ को विभागानुसार स्पष्ट कर चूलिका के रूप में द्वितीय श्रुतस्कंध की रचना की है.

नवब्रह्मचर्य (प्रथम श्रुतस्कंध) के अध्ययनों के नाम स्थानांग एवं समवायांगसूत्रों के अनुसार इस प्रकार हैं : १. सत्थपरिण्णा (शस्त्रपरिज्ञा), २. लोगविजय (लोकविजय), ३. सीओसणिज्ज (शीतोष्णीय), ४. सम्मत्त (सम्यक्त्व), ५. आवन्ति (यावन्तः), ६. धूअ (धूत), ७. विमोह (मोक्ष), ८. उवहाणसुअ (उपधानश्रुत), ९. महापरिण्णा (महापरिज्ञा).

आचारांगसूत्र की उपलब्ध वाचना में छठां धूअ , सातवां महापरिण्णा, आठवां विमोह एवं नववां उवहाणसुअ ऐसा क्रम है. निर्युक्तिकार आर्यभद्रबाहुस्वामि एवं वृत्तिकार आचार्य शीलांकसूरि ने इसी क्रम को स्वीकार किया है.

शस्त्रपरिज्ञा नामक प्रथम अध्ययन में ७ उद्देशक (प्रकरण) हैं. जिसमें पहले उद्देशक में जीव के अस्तित्त्व का विवेचन तथा शेष ६ उद्देशकों में जीव समूह के आरम्भ-समारम्भ रूप हिंसा का विशद् वर्णन है. इस अध्ययन में शस्त्र शब्द का कई बार प्रयोग किया गया है जो लौकिक शस्त्र की अपेक्षा से भिन्न जीवहिंसा के साधन अर्थ में प्रयुक्त हुआ है. इस प्रकार अलग ही अर्थ के अभिधेय का स्पष्ट परिज्ञान कराया गया है. इसलिये शब्दार्थ की दृष्टि से इस अध्ययन का नाम शस्त्रपरिज्ञा सार्थक प्रतीत होता है.

लोकविजय नामक द्वितीय अध्ययन में छः प्रकरण हैं. विजय का अर्थ लोक पर विजय प्राप्त करना अर्थात् संसार के मूल कारण क्रोध, मान, माया एवं लोभ इन चार कषायों को जीतना है. यही इस अध्ययन का सार कहा जा सकता है.

इसका मुख्य उद्देश्य वैराग्य में वृद्धि, संयम में दृढ़ता, जातिगत अभिमान को दूर करना, भोगों में विरक्ति, आरम्भ-समारम्भ का त्याग करवाना तथा ममता छुड़वाना है.

शीतोष्णीय नामक तीसरे अध्ययन में चार उद्देशक हैं. इसमें शीत (सुख) एवं ताप (दुःख) आदि परिषह सहन करके कषाय-त्याग का उपदेश दिया गया है.

पहले उद्देशक में असंयमी व्यक्ति को सोये हुए की कोटी में रखा गया है. दूसरे उद्देशक में बताया गया है कि ऐसा व्यक्ति असंख्य दुःख का अनुभव करता है.

साधु-साध्वी के लिये देह दमन के साथ ही चित्त शुद्धि की वृद्धि करते रहने के लिये तीसरे उद्देशक में निर्देश दिया गया है. चतुर्थ उद्देशक में कषाय त्याग, पाप कर्म त्याग एवं संयमोत्कर्ष हेतु प्रेरित किया गया है.

चतुर्थ अध्ययन का नाम सम्यक्त्व है तथा इसमें भी चार उद्देशक हैं. प्रथम उद्देशक में अहिंसा धर्म की स्थापना तथा सम्यक्त्व सन्मार्ग में दृढ़तापूर्वक प्रवर्त्तन की चर्चा है दूसरे उद्देशक में हिंसकों को अनार्य बता कर उनसे पूछा गया है कि उन्हें मन की अनुकूलता सुखरूप प्रतीत होती है कि मन की प्रतिकूलता? तृतीय उद्देशक में चित्त की शुद्धि का पोषण करने वाले अक्रोध, अलोभ, क्षमा, संतोष आदि गुणों की वृद्धि हो ऐसे तप करने का उपदेश दिया गया है. चतुर्थ उद्देशक में सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप की प्राप्ति के लिये प्रयास करने का उपदेश है.

आवन्ति नामक पांचवें अध्ययन में साधु-साध्वीजी भगवंतो के लिए आचार पद्धति (श्रमणचर्या) का वर्णन है तथा अन्त में शब्दातीत एवं बुद्धि तथा तर्क से अगम्य आत्मतत्त्व का विवेचन है.

धूत नामक छठें अध्ययन में धूत शब्द का अर्थ प्रचलित अवधूत शब्द जैसा ही है. इसमें पांच उद्देशक हैं. इसमें तृष्णा का समूल नाश कर देने के लिये कहा गया है.

महापरिज्ञा नामक सातवां अध्ययन अनुपलब्ध है किन्तु इसकी निर्युक्ति मिलती है. इसकी अन्तिम गाथा में बताया गया है कि साधक को देवांगना, नरांगना तथा तिर्यञ्च इन तीनों का मन, वचन व काया से त्याग करना चाहिये. इस त्याग का नाम महापरिज्ञा है.

विमोक्ख या विमोक्ष नामक आठवें अध्ययन के आठ उद्देशक हैं. प्रथम उद्देशक में बताया गया है कि जिन अनगारों का आचार शास्त्रोक्त आचार से न मिलता हो उनके संसर्ग से दूर रहना चाहिये. दूसरे उद्देशक में कहते हैं कि आहार, पानी, वस्त्र आदि दूषित (आगम मर्यादा से विपरीत) हों तो मोह न कर उनका त्याग कर देना चाहिये. बाद के उद्देशकों में विमोक्ष अथवा कर्म से मुक्ति और स्वरूप प्राप्ति के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है. इस अध्ययन का सारांश यह है कि कभी ऐसी परिस्थिति आ जाय कि संयम की रक्षा न हो सके अथवा स्त्री आदि के अनुकूल या प्रतिकूल उपसर्ग होने पर संयम भंग की स्थिति आ जाय तब विवेकपूर्वक जीवन का त्याग कर देना चाहिये. [शेष पृष्ठ ६ पर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पादकीय

मान्यवर श्रुत भक्त,
नूतन वर्षाभिनन्दन !

श्रुतसागर का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है क्योंकि परम पूज्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की प्रेरणा से इस पत्रिका के प्रकाशन को एक वर्ष पूरा हो रहा है. इसके प्रकाशन में आप सभी के उदार सहयोग तथा मन्तव्यों के लिए हम आभारी हैं.

इस बार 'इतिहास के झरोखे से' आपको सम्राट् अकबर प्रतिबोधक आचार्य श्री हीरसूरि महाराज के जीवन चरित्र का दर्शन करा रहे हैं. 'जैन साहित्य' मे आचारांगसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध का आपको परिचय मिलेगा.

राष्ट्रसंत की निश्रा में हो रही महान शासन प्रभावना के समाचार आपको मन्त्रमुग्ध करेंगे.

'पश्चिम भारतीय जैन चित्रकला' लेख में आपको गुजरात, राजस्थान में प्राचीन जैन चित्र शैली के निर्माण की प्रक्रिया से परिचय होगा.

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के जन्म, विकास एवं प्रगति में कई मूर्धन्य महानुभावों का तन-मन-धन से सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी का केन्द्र आभारी है. समाज से इन हस्तियों का परिचय कराने के लिए हम यथासंभव अपने इन सहयोगियों का परिचय इस अंक से करा रहे हैं.

आशा है आपको यह अंक भी पसंद आएगा. अपने सुझाव लिखना न भूलें. □

पृष्ठ ५ का शेष] **जैन साहित्य**

उपधानश्रुत नामक नौवें अध्ययन में उपरोक्त आठों अध्ययनों में कथित आचारादि भगवान महावीर ने स्वयं आचरे हैं उसका तथा उनकी धीर-गंभीर, घोर तपश्चर्या का उल्लेख है. उपधान शब्द तप का पर्यायवाची है. इसमें चार उद्देशक हैं. पहले उद्देशक में भगवान महावीर को दीक्षा लेने के बाद जो कुछ उपसर्ग सहन करने पड़े उसका वर्णन है. दूसरे और तीसरे उद्देशकों में उन्होंनें कैसे-कैसे कष्ट (परिषह) सहन किये उसका प्रभावपूर्ण वर्णन है. चतुर्थ उद्देशक में उन्होंने किस प्रकार तपश्चर्या की उसका उल्लेख है. पूर्व अध्ययनों में जिस प्रकार की चर्या का उल्लेख है उसी चर्या के आचरण का इस अध्ययन में उल्लेख है. इसी बात को मद्देनज़र रखते हुए इस अध्ययन का नाम आचारांग रखा गया मालूम होता है.

आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध के ९ अध्ययनों के कुल ५१ उद्देशक हैं किन्तु सातवें अध्ययन के ७ उद्देशकों के आधुनिक काल में दुर्लभ होने के कारण अभी मात्र ४४ उद्देशक उपलब्ध हैं.

अगले अंक में आचारांगसूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध की चर्चा की जाएगी.

क्रमशः]

पृष्ठ ४ का शेष] **पश्चिम भारतीय जैन.....**

करने के लिये आलते (अलक्तक) का प्रयोग किया जाता था, जो पीपल के गोंद से बनता था.

चित्र में रंग भर जाने के बाद काले रंग से आकृतियों की रेखाओं को स्पष्ट कर चित्र पूरा किया जाता था. चौदहवीं शती में ये रेखाएं बहुत बारीक और सशक्त हैं परन्तु पंद्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध के बाद ये रेखाएं मोटी और कमजोर सी हो गईं. □

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र- कोबा

श्री शान्तिलाल मोहनलाल शाह : संस्था को मिला आत्मीय स्पर्श

श्रीमान् शान्तिलाल मोहनलाल शाह का जन्म २० सित्तंबर १९२० को दहेगाम में एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ है. जब वे चार वर्ष के थे तब उनकी माता दिवंगत हो गई. श्री शान्तिभाई ने मैट्रिक तक की शिक्षा अहमदाबाद में ग्रहण की तथा मात्र १८ वर्ष की अवस्था में सौ. माणेकबेन के साथ विवाह किया. लगभग २५ वर्षों तक टेक्सटाइल मिल में सेवा करने के बाद आपने व्यापार में प्रवेश किया.

प्रारम्भ में श्रीशान्तिभाई को धर्म में सामान्य रूचि थी. उनकी धर्मपत्नी बहुत ही धर्मनिष्ठ श्राविका हैं. सन् १९६५ में उन्होंने परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्रीकैलाससागरसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में ओळी की थी तब श्री शान्तिभाई को धर्म में अभूतपूर्व जिज्ञासा और रूचि उत्पन्न हुई. आचार्यश्री के सम्पर्क ने उनके जीवन में परिवर्तन कर दिया. धीरे-धीरे वे कई यम-नियम धारण कर श्रावक भी बनें. आपने परिग्रह का परिमाण भी निश्चित किया. श्री शान्तिभाई को दीक्षा लेने की भी इच्छा थी किन्तु किन्हीं सांसारिक कारणों से सब कुछ तय हो जाने के बाद भी यह संभव नहीं हो सका. परम पूज्य गुरु महाराज ने आपको प्रेरित कर कई धार्मिक कार्य सम्पन्न करवाए. सन् १९८० में जब श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबा ट्रस्ट की स्थापना हुई तब उन्हें इसका प्रमुख बनाया गया. लगभग १२ वर्षों तक प्रमुख के रूप में आपने गुरु भगवंत के निर्देशानुसार इस केन्द्र को विकसित करने के लिए अपना जीतोड़ प्रयास किया है. १९८० में कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि कोबा में जैन धर्म का इतना बड़ा डंका बजेगा कि भारत ही नहीं विश्व के नक्शे पर कोबा का स्थान अंकित होगा. लेकिन हाथ कंगन को आरसी क्या वाली कहावत आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी महाराज की निश्रा में अपनी गजब की सूझ एवं दक्षता से आपने सिद्ध कर दी. मन्दिर की जगती मात्र ही बनी थी कि आचार्य श्रीकैलाससागरसूरीश्वरजी म.सा. काल धर्म को प्राप्त हुए. तत्पश्चात् गुरु भगवंत के सुयोग्य प्रशिष्य राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने अपने दादा गुरु के स्वप्न को पूरा करने का अथक् प्रयास किया तथा उनके निर्देशानुसार श्री शान्तिभाई ने अपने सहयोगी ट्रस्टियों सर्वश्री हेमन्तभाई सी. ब्रोकर, सोहनलालजी लालचंदजी चौधरी आदि के सहयोग से श्री महावीरालय, आचार्य श्री कैलाससागरसूरि स्मारक मंदिर, उपाश्रय (आराधना भवन), आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मन्दिर तथा मुमुक्षु कुटीर को अपने वर्तमान स्वरूप में जैन समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है.

इतने बड़े विशाल कार्य को सम्पन्न करना कोई मामूली बात नहीं हैं. श्री शान्तिभाई लगभग १८ वर्षों से जब श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र की स्थापना हुई तब से अभी तक अपना ज्यादातर समय इसकी सेवा में दे रहें हैं. अपनी कर्मठ तथा उद्यमी प्रवृत्तियों के बावजूद श्री शान्तिभाई सीधे एवं सरल तथा मृदु स्वभाव के धनी हैं. अपने जीवन में वे प.पू. गच्छाधिपति आचार्यश्री कैलाससागरसूरि महाराज को तारक गुरु मानते हैं तथा उनके उपकार को बहुत बड़ा आशीर्वाद मानते हैं. श्री शान्तिभाई का पूरा परिवार राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म.सा. का भक्त है. **श्रुतसागर** की ओर से श्रद्धेय शान्ति काका के स्वस्थ एवं सुदीर्घ जीवन की मंगल कामना... □

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खुश खबर

देश-विदेश में अँग्रेजी माध्यम से पढ़नेवाले जैन बालकों के लिये
शीघ्र प्रकाशित होनेवाला अति उपयोगी पुस्तक.

प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन (हिन्दी-अंग्रेजी) - भाग - १,२
Pratikramaṇa Sūtra With Explanation (Hindī-English) – Part – 1,2

संपादक
श्रुतानुरागी पूज्य **उपाध्याय**
श्री धरणेंद्रसागरजी म. सा.
के शिष्य रत्न **मुनिराज**
श्री निर्वाणसागरजी म. सा.

आशीर्वाद दाता
राष्ट्रसंत प्रवचन प्रभावक
सम्मेतशिखर तीर्थोद्धारक
आचार्यदेव
श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प्रकाशक
श्री अरुणोदय फाउण्डेशन
कोबा - ३८२ ००९
(जि. गांधीनगर, गुजरात)
☎ (०२७१२) ७६२०४/०५/५२

◆ प्रथम भाग में सूत्र १ से २४ (पृष्ट ३०४) एवं द्वितीय भाग में सूत्र २५ से ५१ (पृष्ट ३६४) का समावेश **सजिल्द प्रताकार पुस्तक** ११" x ५½" की साइज़ में.

रियायती मूल्य भारत में रू. १२५/-; विदेश में रू. २००/- (भाग - १,२)

◆ पुस्तक की विशेषताएँ ◆

- **जैन श्री संघ** में प्रकाशित होने वाला अपने आप में **अद्वितीय, अनुठा प्रकाशन.**
- **दो प्रतिक्रमण के मूल सूत्र** के साथ **शब्दार्थ, गाथार्थ, समृद्ध विशेषार्थ** एवं **सूत्र परिचय** से युक्त.
- **संपूर्ण पुस्तक दो भाषा - हिन्दी एवं अंग्रेजी में (रोमन लिप्यंतरण एवं सरल अंग्रेजी भाषा में अनुवाद के साथ).**
- **वर्णमाला** के संपूर्ण **रोमन लिप्यंतरण** के **कोष्टकों** के साथ.
- सर्व प्रथम बार **कंप्यूटर द्वारा सर्वांग शुद्ध रोमन लिप्यंतरण** के साथ **स्वच्छ व सुंदर ऑफसेट प्रिंटिंग** में तैयार हुई पुस्तक.
- दोनों भागों में आवश्यक **दोहे, चैत्यंवदन, स्तवन, स्तुति** व **सज्झाय** से समृद्ध.
- सरल भाषा में **गुरुवंदन, चैत्यंवदन, देववंदन, सामायिक, देवसिअ-राइअ प्रतिक्रमण** एवं **पच्चक्खाण पारने की विधियों** से युक्त.
- प्रतिक्रमण आदि की क्रिया में उपयोगी **विविध मुद्राओं** के साथ **आयातित युगो आर्ट पेपर पर ४० रंगीन चित्रों** का सरल भाषा में परिचय.
- ***देश-विदेश में बसे मित्र संबंधियों को विशिष्ट प्रसंग पर भेंट देने के लिये श्रेष्ठ उपहार.***

● **अपन लिये आवश्यक प्रतियाँ आज ही आरक्षित करायें.**
● पुस्तक का मूल्य ड्राफ्ट/एम. ओ. द्वारा **श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, अहमदाबाद** के नाम से ही भेजे.

संपर्क सूत्र : श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, C/o **चंद्रकांत भाई जे. शाह,** ५/ए/३, अर्जुन कोम्प्लेक्स, जय शेफाली रो हाऊस के सामने, सेटेलाइट रोड, **अहमदाबाद** - ३८००१५ (गुज.) ✆ ६५६५३२९

ऑर्डर फॉर्म [ORDER FORM]

प्रति

श्री अरुणोदय फाउण्डेशन, अहमदाबाद

कृपया हमारे लिए **प्रतिक्रमण सूत्र सह विवेचन (हिन्दी-अंग्रेजी) भाग - १,२** की .... प्रतियाँ आरक्षित करें. इन प्रतियों का मूल्य रू. .... का ड्राफ्ट संलग्न है/एम. ओ. द्वारा भिजवाया है. पुस्तक प्रकाशित होते ही आरक्षित प्रतियाँ निम्न पत्ते पर शीघ्र भिजवाइएगा.

संलग्न : ड्राफ्ट नं. : ता. भवदीय

बेन्क नाम :

पत्ता :

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Happy News

Soon publishing a very useful book

for the children studying through English medium in country and abroad.

Pratikramaṇa Sūtra With Explanation [Hindī-English] - Part - 1,2

✠ Editor ✠	● Blessings ●	✠ Publishers ✠
Muni Shri Nirvan Sagarji deciple of **upadhaya** **Shri Dharanendra Sagarji**	*Impressive discourser, Sammet Sikhar Tirth saviour* **Acharyadev** **Shri Padma Sagar Surishwarji**	**Shri Arunoday Foundation** **Koba - 382 009.** Dist. Gandhinagar [Guj.]

❖ Inclusion of sūtra no. 1 to 24 in first part [304 pages] and sūtra no. 25 to 51 in second part [364 pages] in 11" x 5¾" **landscape binded book.**

Concessional cost Rs. 125/- In India; Rs. 200/- abroad (Part 1 & 2).

◆ Peculiarities of the book ◆

- **An unique, uncomman publication** being published in **Jain Shri Sangh.**
- **Main sūtras of two pratikramaṇa** accompained by **literal meaning, stanzaic meaning, rich specific meaning** and **introduction of the sūtra.**
- Complete book in **two languages - Hindi and English [with Roman transliteration and easy translation in English language].**
- With the **charts** of complete **transliteration of alphabets.**
- Book prepared with **neat and clean offset printing** along with **correct transliteration in all respects** done **through computer** for the first time.
- Rich with necessary **dohe [couplets], caityavandana, stavana, stūti** and **sajjhāyas** in both the parts.
- Inclusion of **procedures of guru vandana, caitya vandana, deva vandana, sāmāika, devasia-rāia pratikramaṇa** and **completing the paccakkhāṇa** in an easy language.
- Introduction of **various postures** useful in the rites like pratikramaṇa in an easy language along with **40 colour pictures on imported yugo art paper.**
- ***A best gift for giving to friends and relatives settled in country and abroad on special occations.***

Reserve your copies today itself.

Cost of the book should be sent through D.D./M. O. in favour of **Shri Arunoday Foundation, Ahmedabad.**

Correspondence address : Shri Arunoday Foundation, C/o Chandrakantbhai J. Shah, 5/A/3, Arjun Complex, Opp. Jay Shefali Row House, Satelite Road, **Ahmedabad** - 380015. [Gujarat - India] ✆ 6565329

Order Form

To

Shri Arunoday Foundation, Ahmedabad

Kindly reserve .... copies of **Pratikramaṇa Sūtra With Explanation [English-Hindi] Part - 1,2** for me. A D. D. for Rs. ...., being the cost of books, is enclosed along with / M. O. is sent. Send the reserved copies to the address given below as soon as the book is published.

Encl. :- D. D. no. : Dt. Yours

Bank name :

Postal Address :

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गृह मंदिर : दिग्दर्शन

उद्यमवन्त पुरुषों को चाहिये कि वे धर्म-अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति के लिये इष्ट देव का स्मरण करते हुए रात्रि के अन्तिम प्रहर (ब्राह्ममुहूर्त) में शय्या से उठे.

माता-पिता और वृद्ध पुरुषों को नमस्कार करने वालों को तीर्थयात्रा का फल मिलता है अतः उनको प्रतिदिन नमस्कार करें।

घर में प्रवेश द्वार से बायीं ओर सुंदर देव मंदिर करना चाहिये. गृह मंदिर की भूमि घर के समतल से डेढ़ हाथ ऊँची होनी चाहिये.

पूजा करने वाले को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर अभिमुख हो बैठना चाहिये. दक्षिण, पश्चिम, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य और ईशान यह छः दिशा पूजा के लिये त्याज्य हैं.

पश्चिम दिशा की ओर मुख करके पूजा करने से चौथी पीढी तक संतति का विच्छेद होता है और दक्षिणाभिमुख करने से संतति वृद्धि नहीं होती है.

इसी प्रकार आग्नेयी दिशा अभिमुख पूजा करने से धन हानि, वायव्य दिशा में बांझपना और नैऋत दिशा में कुलक्षय होता है।

ईशान दिशा में दारिद्रप्राप्ति होती है. पूजा करने वालों को प्रथम दो चरणांगुष्ठ फिर क्रमशः दोनों जानु दोनों हाथ, दोनों भुजा, मस्तक, भाल, कंठ, हृदय, नाभि स्थान पर पूजा करनी चाहिये.

बिना केशर चन्दन के जिन प्रतिमा का पूजन कभी नहीं करना चाहिये.

नौ तिलक द्वारा जिन प्रतिमा का पूजन करना चाहिये और विधि के जानकार को प्रभात काल में प्रथम वासक्षेप पूजा करनी चाहिये.

मध्याह्न काल में सुगंधि पुष्पों द्वारा और संध्या काल में धूप से पूजा करना उचित है, जिन प्रतिमा की दायीं ओर दीपक रखना चाहिये.

भगवान की बायीं ओर धूप तथा नैवेद्य सन्मुख रखें. ध्यान सन्मुख बैठकर करें तथा चैत्यवंदन दायीं ओर बैठकर करना चाहिये.

सज्जनों को जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप, नैवेद्य और फल इन चीजों से पूजा करनी इष्ट है. श्वेत पुष्प शान्ति कारक, पीत पुष्प लाभ दायक, श्यामपुष्प पराभव कारक, रक्तपुष्प मांगलिक और पंचवर्णी पुष्प सिद्धिदायक है, पंचामृत पूजा अथवा शान्ति हो तो गुड़ और घी का दीपक जलावें.

सद्गृहस्थ को पद्मासन करके नासिकाग्रभाग उपर दृष्टि स्थिर करके मौन रहकर, शुद्ध वस्त्र परिधान कर मुखकोश बांधकर, जिनेश्वर प्रभु की पूजा करनी चाहिये.

पूर्व दिशा में मुख करके स्नान, पश्चिम में दंतधावन, उत्तर में मुख करके देव पूजा करनी चाहिये.

धर्म, शोक, भय, आहार, निद्रा, काम, कलह और क्रोध यह आठों जितना चाहे उतना बढा-घटा सकते है अतः विवेक करें.

सत्कार्य करने वाले सुकृतकर्मी से कभी पीछे नहीं हटते. (तृप्त नहीं होते) अतः सुज्ञों को सुकार्य करने से कभी चूकना नहीं चाहिये.

सुख-संपत्तिवान गृहस्थों को सुंदर वस्त्र आभूषण पहन कर मंदिर व उपाश्रय आदि धर्म स्थानक में जाना चाहिये. ऐसा करने से पूर्वभव का पुण्य लक्ष्मी के दर्शन से अन्य लोगों की नजर में आता है और खुद नया पुण्य उपार्जित करता है.

मंदिर जाते समय हाथ में फल-फूल अक्षतादि यत्किंचित भी हमेशा लेकर जाये. उपाश्रय में भी गुरु महाराज के पास जाकर जो नहीं आता उस ज्ञान का अभ्यास करे.

जहाँ तक यह मनुष्य देह है तब तक सद्गृहस्थ को हमेशा देव पूजा और गुरुभक्ति करना उचित है. रोगादिक कारणों से ऐसा न हो तो दोष नहीं है.

भव्यात्मा को मन वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति का त्याग कर मन, वचन और काया की शुद्धि पूर्वक पूजा करके सर्व सिद्धि दायक अरिहंत भगवान का ध्यान करना चाहिये.

जिन प्रतिमा के अगर नाखून खंडित हो तो शत्रु से भय उत्पन्न होता है. अंगुलि खंडित होने पर देशभङ्ग, बाहु खंडित होने पर बंधन, नासिका से कुल क्षय और चरण खंडित होने पर धन हानि होती है.

सिंहासन खंडित हो तो स्थान भंग, वाहन खंडित होने पर अपने वाहन का नाश और परिकर के खंडित होने पर अपने नौकर चाकर का नाश होता है. □

प्रवचनांश

श्री-गणेश

आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी

व्यवहार में किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ में लोग जिनकी वन्दना करते है, उन गणेश का उदर बहुत बड़ा है. यह बताता है कि जो गण के स्वामी है, समुदाय के नेता हैं, देशनेता हैं, जिनको प्रमुख बनना है, उनका पेट दुनियां की बातों को हजम कर सके उतना विशाल सागर जैसा होना चाहिए.

गणेश की आँखें छोटी हैं, जो बताती हैं कि जो गण का नेता होता है उसकी दृष्टि सूक्ष्म होनी चाहिए. हर एक बात को सूक्ष्म दृष्टि से देखना चाहिए इससे वस्तु में रहा हुआ मर्म समझ में आता है. आत्मा और परमात्मा का विचार करने के लिए सूक्ष्म दृष्टि की ही आवश्यकता है.

गणेश के कान बड़े हैं, अर्थात् जो देश का नेता अथवा कुटुम्ब का मुखिया हो उसके कान बड़े होने चाहिए जिससे सबकी बातों को सुनकर जो योग्य हो वही अपनाए.

गणेश की नाक लम्बी है, इसका अर्थ यह हुआ कि उसे चारों ओर सूंघ-सूंघ कर अच्छी वस्तु को अपना लेनी चाहिए. बड़े लोग अच्छाई को अपनाते है और निकम्मी बातों को छोड़ देते हैं.

गणेश बड़े और उनका वाहन छोटा. चूहा छोटा होता है. इसी तरह बड़े आदमी का सहायक छोटा होना चाहिए, जो चारों ओर की छोटी-छोटी बातों का भी ध्यान रखे.

दूसरा, बड़े आदमी को छोटे आदमी को भी सम्मान देना चाहिए, स्थान देना चाहिए. छोटे आदमी में भी बहुत से सद्गुण होते हैं.

गणेश सद्गुणों के प्रतीक हैं.

भगवान से केवल प्रकाश की मांग करके अपने मार्ग में आगे बढ़ते ही जाना चाहिए. राज्य का त्याग करने के बाद एक दिन भर्तृहरि जब गुदड़ी सी रहे थे, तब धागा सूई में से निकल गया, रात हो गई थी इस वजह से वे फिर सूई में धागा डाल नहीं सके. तब लक्ष्मीदेवी ने रेशम की गुदड़ी दी तो भर्तृहरि ने लेने से इन्कार कर दिया. जब देवी ने वरदान मांगने को कहा तो, भर्तृहरि ने सूई में धागा डालने की मांग की. □

☙ पाठकों से नम्र निवेदन ☙

यह अंक आपको कैसा लगा, हमें अवश्य लिखें. आपके सुझावों की प्रतीक्षा है. आप अपनी अप्रकाशित रचना/लेख सुवाच्य अक्षरों में लिखकर हमें भेंज सकतें हैं. उचित लगने पर उसे प्रकाशित किया जायेगा.

-संपादक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

कोबा, गांधीनगर - ३८२००९

अपने सभी सहयोगियों, दाताओं, शुभेच्छकों एवं यात्रिओं का आभारी है.

दाताओं के उदार सहयोग से इस जैन तीर्थ ने सफलता के कीर्तिमान स्थापित किये हैं. नूतन वर्ष में आप सभी का सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा, ऐसा विश्वास है. यहाँ पर विकास की कई योजनाएं एवं कार्यक्रम आपके सहयोग की अपेक्षा रखतें हैं.

आप अपना बहुमूल्य सहयोग निम्न योजनाओं हेतु प्रदान कर सकते हैं :

आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञान मंदिर
में विविध जगहों पर तक्ति में नाम हेतु :

१. आचार्य हरिभद्रसूरि कक्ष
२. याकिनी महत्तरा कक्ष
३. पेथड शाह मन्त्री खण्ड
४. जगत् शेठ खण्ड
५. ठक्कर फेरु खण्ड
६. विमल मन्त्री खण्ड
७. वाचक नागार्जुन कक्ष
८. महाकवि धनपाल खण्ड
९. आचार्य स्कंदिल कक्ष
१०.श्रेष्ठी धरणा शाह खण्ड
११.श्राविका अनुपमा देवी कक्ष
१२.श्रावक ऋषभदास कक्ष
१३.सम्राट् सम्प्रति संग्रहालय की प्रयोगशाला
१४.स्वागत कक्ष

ज्ञान मंदिर की विविध प्रवृत्तियों हेतु :

१५.श्रुतरक्षक
१६.श्रुत प्रसार सहयोगी
१७.श्रुत भक्त
१८.हस्तप्रत मंजूषा सहयोगी.
१९.श्रुत संवर्धन योजना
२०.पुस्तक प्रकाशन

उपर्युक्त योजनाओं हेतु आप अपने अधिकार क्षेत्र के ज्ञान द्रव्य अथवा व्यक्तिगत कोष में से यथा योग्य सहयोग देकर सुकृतानुभागी बनें.

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्रः

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा, गांधीनगर ३८२००९
फोन : (०२७१२) ७६२०४, ७६२०५, ७६२५२

बोरीज, गांधीनगर में प्रस्तावित विश्व मैत्री धाम में भव्य मंदिर निर्माण हेतु भूमि पूजन सम्पन्न

परम पूज्य, शासन प्रभावक, राष्ट्रसंत, महान जैनचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराज् साहेब की प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से आश्विन शुदि ८, रविवार, २०.१०.१९९६ को गांधीनगर स्थित बोरीज में श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र- कोबा की बोरीज शाखा - विश्व मैत्री धाम में वर्तमान श्री महावीरस्वामी के मंदिर के जीर्णोद्धार रूप नवीन मंदिर के निर्माण हेतु भूमि-पूजन सोल्लास सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर ट्रस्टीगण सहित जैन समाज के अग्रणी तथा महुडी, साबरमती, अहमदाबाद, गांधीनगर आदि कई संघों के प्रमुख उपस्थित थे. जैन समाज को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि प्रस्तावित मंदिर अद्वितीय एवं अनूठा मंदिर होगा.

हम वाचकों को याद दिलाते हैं कि इस परिसर में स्थित वर्तमान मंदिर में भगवान महावीरस्वामी की प्रतिष्ठा योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा लगभग ८३ वर्ष पूर्व की गई थी. यह प्रतिमा इसी स्थान के भूगर्भ से प्राप्त हुई थी. ◻

दीपावली एवं नूतन वर्ष के मंगलमय अवसर पर

हार्दिक शुभाभिनन्दन

सोहनलाल लालचंदजी चौधरी	प्रमुख
हेमन्त सी. ब्रोकर	उप प्रमुख
चांदमलजी पी. गोलिया	सचिव
शांतिलाल मोहनलाल शाह	ट्रस्टी
उदयनभाई आर. शाह	"
लालचंदजी चोपड़ा	"
कांतिलालजी धनराजजी कांकरिया	"
तेजराजजी जुगराजजी सालेचा	"
बाबूलालजी जैन	"

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र ट्रस्ट बोर्ड

कोबा, गांधीनगर ३८२ ००९
फोन : (०२७१२) ७६२०४, ७६२०५, ७६२५२
फेक्स : ०२७१२-७६२४९

Printed Matter - Book Post

Published & Despatched by
Secretary, Sri Mahavir Jain Aradhana Kendra
Koba, Gandhinagar - 382009. Ph. 76204, 76205, 76252
Printed at

For Private and Personal Use Only